बोरियल वन

[स्रोत: डाउन टू अर्थ](#)

एक अध्ययन के अनुसार **विश्व के लगभग आधे बोरियल वनों** में जलवायु परविर्तन के कारण परविर्तन हो रहे हैं, जिससे वनाग्नि का खतरा बढ़ रहा है और उनकी कार्बन सिंक भूमिका प्रभावित रही है।

- **अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष:** बोरियल वनों में **वैश्विक औसत से चार गुना अधिक तेज़ी से तापन** हो रहा है।
  - दक्षिण से उत्तर की ओर वृक्षों का घनत्व घटने के कारण बोरियल वनों स्थिति **विवृत (विरल वृक्ष आवरण) होती जा रही है,** जिससे उनकी **कार्बन भंडारण क्षमता कम** हो रही है और **दावानल का खतरा बढ़ रहा है**।
  - पर्माफ्रॉस्ट के पिघलने से **मृदा के कार्बन** की महत्त्वपूर्ण मात्रा अवमुक्त हो सकती है, जिससे कार्बन भंडारण और भी जटिल हो जाएगा।
- **बोरियल वन:** बोरियल वन **(या "टैगा") विश्व का सबसे बड़ा स्थलीय बायोम** है, जो **वैश्विक वन क्षेत्र के 30%** और **पृथ्वी की भूमि सतह के 10% हिस्से** पर विस्तृत है।
  - बोरियल पारिस्थितिकी क्षेत्र मुख्यतः **उत्तरी गोलार्द्ध के आठ देशों (** कनाडा, चीन, फिनलैंड, जापान, नॉर्वे, रूस, स्वीडन और अमेरिका) में विस्तृत है।
  - **बोरियल वनों** में मुख्य रूप से **पाइन, स्प्रूस और फर जैसे** शंकुधारी वृक्ष पाए जाते हैं और इसके अतिरिक्त कुछ चौड़ी पत्ती वाली प्रजातियाँ जैसे कि **चिनार और बर्च वृक्ष** भी पाए जाते हैं। इनकी वृद्धि **उच्च अक्षांशीय** परिवेश में होती है।
    - **किसी भी अन्य बायोम की तुलना में इसमें अधिक सतही अलवणीय जल** होता है, जो उत्तरी महासागरों और वैश्विक जलवायु पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालता है।
  - जलवायु विनियमन में प्रमुख भूमिका निभाते हुए और उष्णकटिबंधीय वनों के साथ प्रतिस्पर्द्धा करते हुए प्रमुख कार्बन भंडार के रूप में कार्य करते हुए बोरियल क्षेत्र 33% से अधिक काष्ठ और 25% कागज़ निर्यात का स्रोत हैं।

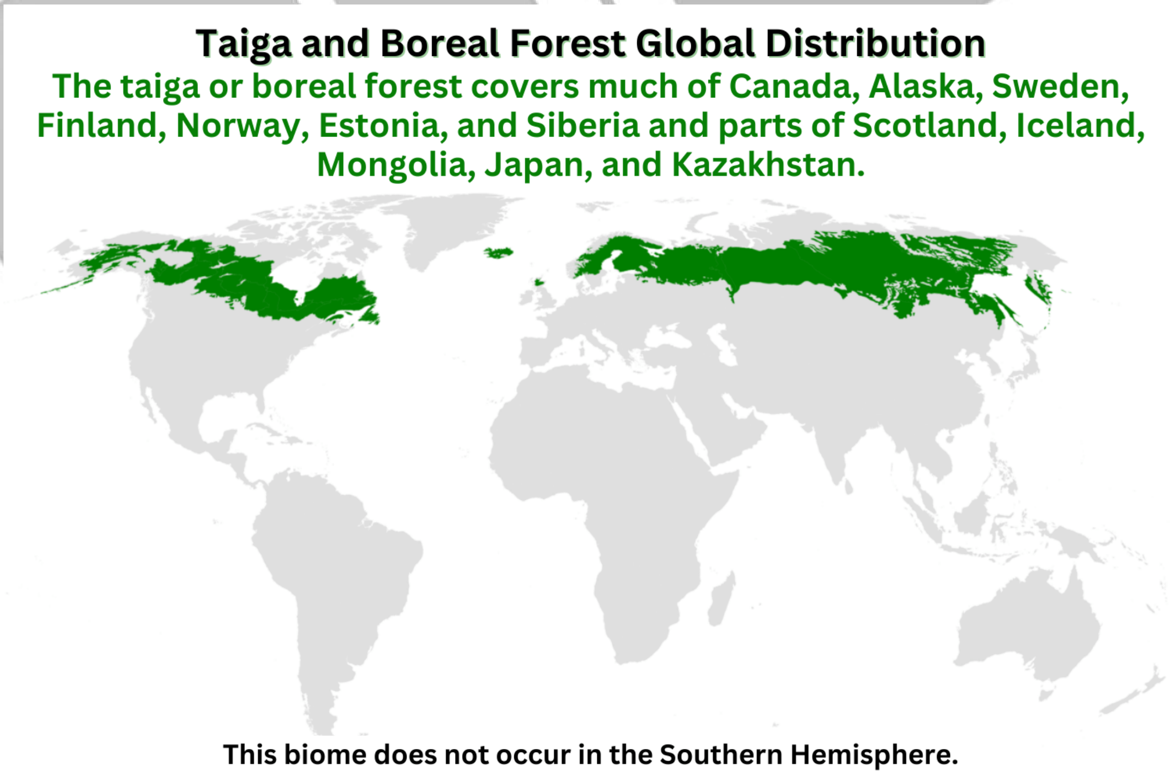

और पढ़ें: भारत में वनों के प्रकार

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/boreal-forests